6

अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी का वर्णन

गौरी श्रीवास्तव*
भारती पांडेय**

मोहनदास करमचंद गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान एवं सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे। उन्होंने स्वराज प्राप्ति के लिए सत्याग्रह, अहिंसा और असहयोग का मंत्र दिया एवं जन-जन को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। यूँ तो उनके जीवन और कार्यों के विषय में कई किताबें लिखी गई हैं परंतु अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों में जहाँ भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का ज़िक्र आता है, वहाँ महात्मा गांधी का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है, जो कि बहुत ही प्रसंशनीय है। सामजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के परियोजना शीर्षक — *भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिका* के तहत कुछ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के दौरान विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों में दिए गए, गांधी जी के वर्णन को पढ़ा और देखा गया कि विभिन्न देशों में किस प्रकार भारतीय इतिहास के इस महान व्यक्तित्व को दर्शाया गया है। अतः मालदीव, दक्षिण अफ़्रीका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, अफ़गानिस्तान, भूटान, श्रीलंका और कुछ अन्य अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों में दिए गए गांधी जी के विवरण का विश्लेषण किया गया तथा जाँच के परिणाम लेख के माध्यम से प्रस्तुत किए गए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी को दो माध्यम से दर्शाया गया है — (1) चित्रों के माध्यम से और (2) उनके कार्यों और जीवन के वर्णन द्वारा। उनके प्रवेश से भारतीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा मिली। उन्होंने जन-जन में राजनीतिक चेतना जगाई और समाज के सभी वर्गों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई में शामिल करने का प्रयास किया। भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई को जन आंदोलन में परिवर्तित करने का मुख्य श्रेय उन्हीं को ही जाता है।

मालदीव की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक *सोशल स्टडीज़* (*2*), ग्रेड 7 में बहुत ही संक्षिप्त में महात्मा गांधी के विषय में उल्लेख मिलता है। इस पुस्तक में उनके जीवन एवं दक्षिण अफ़्रीका में उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया गया है। साथ ही

* *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016
** *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* (*जे.पी.एफ़.*), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

साथ ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध लड़ाई में उनके द्वारा अपनाई गयी नीतियों, अहिंसा और सत्याग्रह का भी उल्लेख है। इसके अतिरिक्त उनके नेतृत्व में आरंभ हुए 'भारत छोड़ो आंदोलन' का विशेष वर्णन है। उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में दिखाया गया है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित किया। इस पुस्तक में यह भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ़ लड़ाई में स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए चरखे को प्रचलित किया और अपने जीवन में हाथ से बनाए वस्त्रों का प्रयोग किया।

दक्षिण अफ़्रीका की आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक *लर्निंग स्टेशन सोशल साइंस ग्रेड 8*, लर्नर्स बुक की इकाई पाँच के शीर्षक — 'ब्लैक पीपल इन साउथ अफ़्रीकन वार' में महात्मा गांधी का विवरण द एशियन एम्ब्युलेन्स, ये संगठन उनके द्वारा एकजुट किए गए भारतीय मूल के लोगों द्वारा बनाया गया था, के संदर्भ में किया गया है। दक्षिण अफ़्रीका में ही उन्होंने सर्वप्रथम अहिंसा और सत्याग्रह की अपनी नीति का प्रयोग किया था, इस विषय का विशेष वर्णन मिलता है। दक्षिण अफ़्रीका में बसे एशियन समुदाय के लोगों और बड़े उद्योगपतियों ने भी उनके द्वारा सुझाए गए सत्य और अहिंसा के मार्ग का बढ़-चढ़ कर समर्थन किया।

पाकिस्तान की आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक *सामाजिक विज्ञान* के पाठ 'द पाकिस्तान मूवमेंट 1906–1947' में उन परिस्थितियों का वर्णन किया गया है, जिनके कारण पाकिस्तान का निर्माण हुआ। इस पाठ में बहुत ही एकतरफ़ा नज़रिये से महात्मा गांधी और उनके कार्यों का उल्लेख किया गया है। कई स्थानों में तो उनके लिए नकारात्मक शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जैसे — "मिस्टर गांधी वास ए श्रूड पॉलिटिशिन" (Mr. Gandhi was a shrewd Politician) (पृष्ठ 81) एवं कुछ जगह में उन्हें कट्टर हिंदुवादी नेता बताया गया है, जो केवल हिंदुओं के हित के लिए ही कार्य कर रहे थे — "....मिस्टर गांधी बीइंग ए स्टौञ्च हिंदू इन्सिस्टेड ऑन गेटिंग थिंग्स डिसाइडेड इन हिज़ ऑन वे" (Mr. Gandhi being a staunch Hindu insisted on getting things decided in his own way) (पृष्ठ 84)। इस पाठ में ऐसे तथ्यों को चुन कर उजागर किया गया है, जो पाठक को एक ऐसा दृष्टिकोण देते हैं, जिससे यह लगता है कि पाकिस्तान का निर्माण एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी।

बांग्लादेश की नौवीं एवं दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक *सोशल साइंस*, सेक्शन 3 के पाठ 'मूवमेंट्स फॉर पॉलिटिकल सेल्फ़ डिटर्मिनेन्स' में महात्मा गांधी का उल्लेख उनके नेतृत्व में हुए तीन आंदोलन — खिलाफ़त, असहयोग और भारत छोड़ो, के संदर्भ में मिलता है। इसके साथ ही उनकी तकनीक, सत्याग्रह और अहिंसा, का भी संक्षिप्त में ज़िक्र किया गया है। इस अध्याय में चौरी-चौरा में हुए हिंसक हादसे, जिसमें कई पुलिस कर्मियों की जान को हानि हुई आदि का भी उल्लेख है। इस हादसे के बाद उन्होंने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। उनके द्वारा शुरू किए गए भारत छोड़ो आंदोलन का भी संक्षिप्त में उल्लेख इस पुस्तक में मिलता है। क्रिप्स मिशन की असफलता और द्वितीय विश्व युद्ध के संकट को देखते हुए उन्होंने

और कुछ मुख्य नेताओं ने ब्रिटिश शासन से पूर्ण आज़ादी के लिए भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की। आंदोलन शुरू होते ही उन्हें एवं अन्य नेताओं को नज़रबंद कर लिया गया। इस पुस्तक में छात्रों को महात्मा गांधी की तसवीर से भी अवगत कराया गया है। पाठ के अंत में दिये गए अभ्यास कार्य के बहुत से प्रश्न भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित हैं।

नेपाल की नौवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक *सामाजिक विज्ञान* के पाठ इक्कीस 'इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस' में उनके तीन मुख्य आंदोलनों — असहयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो, का उल्लेख है। जब असहयोग आंदोलन अपने शिखर पर था, तब करीब 3000 क्रांतिकारियों ने गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक क्षेत्र के पुलिस थाने में आग लगा दी। इस हादसे में 25 सिपाही और एक इंस्पेक्टर की जान चली गयी। इस अहिंसक घटना के बाद उन्होंने आंदोलन वापस ले लिया। सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने साबरमती स्थित अपने आश्रम से दांडी समुद्र तट तक पैदल यात्रा की। समुद्र तट पर नमक बनाकर औपनिवेशिक नमक कानून तोड़ा। इन सभी घटनाओं का उल्लेख नेपाल की पाठ्यपुस्तक में मिलता है। इसके साथ ही गोल मेज़ सम्मेलन, जिसमें गांधी जी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया, के बारे में भी बताया गया है। इस पाठ में महात्मा गांधी का एक चित्र भी विद्यार्थियों को दिखाया गया है।

अफ़गानिस्तान, भूटान एवं श्रीलंका की पाठ्यपुस्तकों में भारतीय इतिहास का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। श्रीलंका का पाठ्यक्रम, जो ऑनलाइन उपलब्ध है, से ज्ञात होता है कि वहाँ विद्यालयों में, सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत नागरिक शास्त्र एवं भूगोल जैसे विषय ही पढ़ाये जाते हैं। वेबसाइट के अनुसार पाठ्यक्रम में इतिहास का कोई विषय नहीं है।

अन्य अंतर्राष्ट्रीय किताबों में महात्मा गांधी का उल्लेख

री डिस्कवरिंग द ट्वेंटियथ सेंचुरी वर्ल्ड — ए वर्ल्ड स्टडी आफ़्टर 1900, लंदन, में महात्मा गांधी के शुरुआती जीवन और दक्षिण अफ्रीका में उनके कार्यों का वर्णन है। उनकी नीतियों, विशेष कर, अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रदर्शन, का उल्लेख भी मिलता है। इस पुस्तक में उनके व्यक्तित्व, पहनावे, रहन-सहन का भी उल्लेख है। साथ ही उनके नेतृत्व में हुए नमक आंदोलन का संक्षिप्त में वर्णन है। इसके साथ ही इस पुस्तक में उपनिवेशवाद पर भी चर्चा की गई है।

अन्य किताब *मॉडर्न टाइम्स — लाइफ़ इन इंग्लैंड*, के पाठ, 'लेट माई पीपल ग्रो — द एंड ऑफ़ द थ्री एम्पायर्स' में उनका उल्लेख भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में मिलता है। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व पर भी चर्चा की गयी है। लोगों द्वारा उन्हें एक संत के रूप में भी देखा जाता था। उनकी यह छवि अत्यंत लोकप्रिय थी।

निष्कर्ष

अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं महात्मा गांधी का उल्लेख मिलता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में उनके योगदान को मुख्य रूप से दर्शाया गया है। इन पुस्तकों में, चाहे संक्षिप्त में ही सही, दिए गए विवरणों के अध्ययन से विश्व इतिहास में महात्मा गांधी, उनके

कार्यों, एवं विचारों के महत्व और योगदान का पता चलता है। विभिन्न आंदोलनों के विवरण के ज़रिए छात्रों को उनके मूल मंत्र — सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह से परिचित कराने का प्रयास किया गया है, जो कि बहुत ही प्रसंशनीय है।

सुझाव

जिस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों को महात्मा गांधी की विचारधारा से अवगत कराया जा रहा है। हमारे देश में विद्यालयी स्तर पर उनके सिद्धांतों को केवल पढ़ना और पढ़ाना ही नहीं, बल्कि अमल में लाना भी आवश्यक है। शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षण (सीखने की प्रक्रिया) के माध्यम से बच्चों को गांधीवादी आदर्शों से परिचित कराएँ। विद्यालयी स्तर पर तो शिक्षक ही बच्चों के पहले आदर्श होते हैं। इसके साथ शिक्षक अपने जीवन में गांधी जी के सिद्धांतों को सम्मिलित करें और छात्रों के लिए एक आदर्श बनें। उनकी विचारधारा के प्रसार के लिए शिक्षक विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे — उनके जीवन और व्यक्तित्व पर नाटक का आयोजन, उनसे संबंधित क्षेत्रों का भ्रमण, उनकी विचारधारा पर सामूहिक परिचर्चा का आयोजन, राष्ट्रीय और राज्य संग्रहालयों का भ्रमण आदि। आज के युग में मैत्री, परस्पर सौहार्द्र को बढ़ाने के लिए छात्रों में उनके सिद्धांतों के प्रति रुझान की अत्यधिक आवश्यकता है और इस दिशा में शिक्षकों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। अभिभावकों का भी कर्तव्य है कि बच्चों को गांधी के विचारों से अवगत कराएँ और खादी

गांधी जी का चर्ख़ा

I

हे हरी हर रंग में मेरे हो भरा हुब्बे वतन।
ख़ूने रवां में जोश हरदम ऐ दिल हुब्बे वतन।।
ख़्याल हो तो बस इसी का हो इसी की गुफ़्तगू।
दिल से भी नंदलाल तेरे हो लगा हुब्बे वतन।।

II

चित्त से हिंदी चाह करके दिल लगा चर्ख़ा चले।
ढीला रहे हासिद चर्खा गर तेरा चर्ख़ा चले।।
जिस तरह चकराय हासिद चाल चक्कर दार से।
इस तरह "नंदलालजी" इस हिंद का चर्ख़ा चले।।

स्रोत — गांधी जी का चर्ख़ा, संबत 1987, पन्नालाल वर्मा भजनोपदेशक, प्रयाग

से जोड़ने का प्रयास करें। गांधीवादी विचारधारा और स्वतंत्रता के संघर्ष जैसे विषयों के प्रति बच्चों की रुचि उत्पन्न करने के लिए इस विषय को कई विधियों से पढ़ाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, गांधी जी और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े गीतों और भजनों से उन्हें अवगत कराना, स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता सेनानियों से जुड़ी कहानियों और जीवनियों को पढ़ाना आदि।

संदर्भ

इन्स. लोरेन, करेन मॉरिसन, मिशेल फ्रीडमैन हिलेरी विल्सन, दक्षिण अफ़्रीका. 2006. *लर्निंग स्टेशन सोशल साइंस ग्रेड 8*, लर्नर्स बुक, नसाउ वाएआ, दक्षिण अफ़्रीका.

नेपाल. 2004. *सामाजिक विज्ञान*, कक्षा 9, जनक एजुकेशन मैटीरियल्स सेंटर लिमिटेड, सानोथिमी, भक्तापुर, नेपाल.

पाकिस्तान. 2003. *सामाजिक विज्ञान*, कक्षा 8, पंजाब टेक्स्टबुक बोर्ड, लाहौर.

प्रयाग. 1987. *गांधी जी का चर्खा*, संबत, पन्नालाल वर्मा भजनोपदेशक.

बांग्लादेश. 2002. *सामाजिक विज्ञान IX–X*, 2002, नेशनल करिकुलम एंड टेक्स्टबुक बोर्ड, ढाका.

मालदीव. 2003. *सोशल स्टडीज़ (2)*, ग्रेड 7, एजुकेशन डेवलपमेंट सेंटर, रिपब्लिक ऑफ़ मालदीव.

मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स करिकुलम डेवलपमेंट सेंटर एंड जनक एजुकेशन मैटीरियल सेंटर लिमिटेड नेपाल. 2011. *सामाजिक विज्ञान*, कक्षा 9, जनक एजुकेशन मैटीरियल्स सेंटर लिमिटेड, सानोथिमी, भक्तापुर, नेपाल.

विलियम ए. स्टोब्ब्स, विलियम और एल्लिस. 1970. लेट माई पीपल ग्रो — द एंड ऑफ़ द थ्री एम्पायर्स. *मॉडर्न टाइम्स — लाइफ़ इन इंग्लैंड*, 6, लंदन.

शेफ़र्द, कीथ. 1993. *री डिस्कवरिंग द ट्वेंटियथ सेंचुरी वर्ल्ड — ए वर्ल्ड स्टडी आफ़्टर 1900*, लंदन.